पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

मार्गदर्शन : डॉ. सुनील बहल
सहायक निदेशक एस. सी. ई. आर. टी. मोहाली

,

सौजन्य:-
सुनील वर्मा ,
हिंदी शिक्षक,
सरकारी हाई स्कूल,
जस्सो मजारा,
शहीद भगत सिंह
नगर.
+91 9988531400

शोधक:-
राजन,
हिंदी शिक्षक,
स. मि. स्कूल,
लोहरका कलां,
अमृतसर
+91 9501003567

मीराबाई

जीवन–परिचय:–

मीराबाई का जन्म राजस्थान में मेड़ता के पास चौकड़ी गाँव में सन् 1498 ई० के आसपास हुआ था। इनके पिता का नाम रतनसिंह था। उदयपुर के राणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ इनका विवाह हुआ था, किन्तु विवाह के थोड़े ही दिनों बाद इनके पति की मृत्यु हो गयी।

मीरा बचपन से ही भगवान् कृष्ण के प्रति अनुरक्त थीं । सारी लोक–लज्ञा की चिन्ता छोड़कर साधुओं के साथ कीर्तन–भजन करती रहती थीं। उनकी इस प्रकार का व्यवहार उदयपुर के राज–मर्यादा के प्रतिकूल था। अतः उन्हें मारने के लिए जहर का प्याला भी भेजा। गया था, किन्तु ईश्वरीय कृपा से उनका बाल–बाँका तक नहीं हुआ। परिवार से विरक्त होकर वे वृन्दावन और वहाँ से द्वारिका चली गयीं। औंर सन् 1546 ई० में स्वर्ग वासी हुईं।

रचनाएँ:–

मीराबाई ने भगवान् श्रीकृष्ण के प्रेम में अनेक भावपूर्ण गेय पदों की रचना की है जिसके संकलन विभिन्न नामों से प्रकाशित हुए हैं। नरसीजी को मायरा, राम गोविन्द, राग सोरठ के पद, गीत गोविन्द की टीका मीराबाई की रचनाएँ हैं।

मीराबाई (पदावली)

बसौ मेरे नैनन में नन्द लाल।
मोहनि मूरति साँवरी सूरति नैना बनै विसाल।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अरुण तिलक दिये भाला
अधर सुधारस मुरली राजति उर वैजन्ती माल।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित नुपूर शब्द रसाल।
मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई भक्त बछल गोपाल।। (1)

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु, आपनो न कोई।
छांड़ि दई कुल की कानि, कहा करै कोई।
संतन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई।
अँसुअन जल सींचि सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई, आनंद फल होई।
भगत देखि राजी भई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारौ अब मोही। (2)

"मीराबाई"

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

1. बसो मेरे नैनन में ..... भक्त बछल गोपाल।

शब्दार्थ:-

मकराकृत = मछली के आकार के, छुद्र = छोटी, रसाल = मधुर, भक्त-बछल = भक्त-वत्सल ।

प्रसंग:- प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी पुस्तक-10' में संकलित श्री कृष्ण की अनन्य उपासिका मीराबाई के काव्य-ग्रन्थ 'मीरा-सुधा-सिन्धु' के अन्तर्गत 'पदावली' शीर्षक से अवतरित है। प्रस्तुत पद्य में प्रेम-दीवानी मीरा भगवान् कृष्ण की मोहिनी मूर्ति को अपने नेत्रों में बसाना चाहती हैं। इस पद में कृष्ण की मोहिनी मूर्ति का सजीव चित्रण है।

व्याख्या:- कृष्ण के प्रेम में दीवानी मीरा कहती हैं कि नन्द जी को आनन्दित करने वाले हे श्री कृष्ण! आप मेरे नेत्रों में निवास कीजिए। आपका सौन्दर्य अत्यन्त आकर्षक है। आपके सिर पर मोर के पंखों में निर्मित मुकुट एवं कानों में मकर की आकृति के कुण्डल सुशोभित हो रहे हैं। मस्तक पर लगे हुए लाल तिलक और सुन्दर विशाल नेत्रों से आपका श्यामवर्ण का शरीर अतीव सुशोभित हो रहा है। अमृतरस से भरे आपके सुन्दर होंठों पर बाँसुरी शोभायमान हो रही है। आप हृदय पर वन के पत्र-पुष्पों से निर्मित माला धारण किये हुए हैं। आपकी कमर में बँधी करधनी में छोटी-छोटी घण्टियाँ सुशोभित हो रही हैं। आपके चरणों में बँधे घुंघरुओं की मधुर ध्वनि बहुत रसीली प्रतीत

होती है। हे प्रभु! आप सज्जनों को सुख देने वाले, भक्तों से प्यार करने वाले और अनुपम सुन्दर हैं। आप मेरे नेत्रों में बस जाओ।

भावार्थ:-
यहाँ भगवान् कृष्ण की मनमोहक छवि का परम्परागत वर्णन किया गया है। मीराबाई की कृष्ण के प्रति अनन्य भक्तिभावना प्रकट हुई है।

2. मेरे तो गिरधर ..... तारो अब मोई।

शब्दार्थ:-
कानि = मर्यादा, प्रतिष्ठा, ढिंग = समीप, आणंद = आनन्द , राजी = प्रसन्न।
प्रसंग:- प्रस्तुत पद 'हिन्दी पुस्तक-10' में संकलित एवं श्री कृष्ण की अनन्य उपासिका मीरा द्वारा रचित "पदावली" से उद्धृत है। मीरा एकमात्र श्री कृष्ण को ही अपना सर्वस्व घोषित कर रही हैं। संसार के सारे नाते तोड़कर, लोकलाज छोड़कर, केवल श्रीकृष्ण के प्रेम के आनन्द-पल का आस्वाद ले रही हैं।

व्याख्या- मीरा कहती हैं-अब तो मैं अपना नाता केवल एक श्री कृष्ण से मानती हूँ और कोई भी मेरा इस संसार में अपना नहीं है। सिर पर मोरमुकुट धारण करने वाले नटवर-नागर ही मेरे पति हैं। माता–पिता, भाई-बन्धु आदि से अब मेरा कोई नाता नहीं रहा। मैंने तो कृष्ण-प्रेम के लिए अपने कुल की प्रतिष्ठा को भी त्याग दिया है। अब मेरा कोई क्या कर लेगा? सभी कहते हैं कि मैंने सन्तों का सत्संग करके स्त्रियोचित लोक-लज्जा को भी तिलांजलि दे दी है। पर मुझे इसकी चिन्ता नहीं। मैंने अपनी कृष्ण-प्रेम की लता को अपने

आँसुओं से सींचकर (महान् कष्ट सहन करके) बढ़ाया है। अब तो यह प्रेम-लता बहुत फैल चुकी है, अब तो इस पर आनन्दरूपी फल लगने वाले हैं। मुझे तो अब केवल प्रियतम कृष्ण की भक्ति में ही सुख मिलता है। सांसारिक विषयों को देखकर मेरा मन दु:खी होता है। मीराबाई कह रही हैं कि हे गिरिधर गोपाल! अब आप अपनी दासी मीरा का उद्धार कीजिए और उसे अपनाकर धन्य बना दीजिए।

भावार्थ:-

1. श्री कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम-भाव और भक्ति को मीरा ने हृदयस्पर्शी शब्दावली में साकार किया है।

प्रश्न 2.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक – दो पंक्तियों में दीजिए:

प्रश्न (1) श्री कृष्ण ने कौन सा पर्वत धारण किया था?
उत्तर:- श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत धारण किया था ।

प्रश्न (2) मीरा किसे अपने नैनों में बसाना चाहती है?
उत्तर:- मीरा श्री कृष्ण को अपने नैनों में बसाना चाहती है।

प्रश्न (3) श्री कृष्ण ने किस प्रकार का मुकुट और कुंडल धारण किया है?
उत्तर:- श्री कृष्ण ने सिर पर मोर के पंखों में निर्मित मुकुट एवं कानों में मकर की आकृति के कुण्डल धारण किया है ।

प्रश्न (4) मीरा किसे देखकर प्रसन्न हुई और किसे देखकर दु:खी हुई?
उत्तर:- भक्तों को देखकर प्रसन्नता हुई और सांसारिक विषयों को देखकर दु:खी हुई ।

प्रश्न (5) सन्तों की संगत में रहकर मीरा ने क्या छोड़ दिया?
उत्तर:- सन्तों की संगत में रहकर मीरा ने लोक-लज्ञा छोड़ दिया था ।

प्रश्न (6) अपने आंसुओं के जल से किस बेल को सींच रही थी?
उत्तर:- अपने आंसुओं के जल से अपनी कृष्ण-प्रेम की बेल (लता) को सींच रही थी ।

प्रश्न (7) पदावली के दूसरे पद में मीराबाई गिरिधर से क्या चाहती है?
उत्तर:- पदावली के दूसरे पद में मीराबाई गिरिधर से जगत से तरना(उद्धार) चाहती है ।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के दो- दो पर्यायवाची शब्द बनाओ:
उत्तर:-

भाल = माथा, मस्तक ।	जगत = संसार, दुनिया ।
प्रभु = ईश्वर, भगवान, परमात्मा।	वन = अरण्य, कानन ।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखें और वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

उत्तर:-

कुल = खानदान :- राम जी सूर्य के कुल मे पैदा हुए ।

कूल = किनारा :- नदी का कूल बहुत शांत दिखता है ।

कटि = कमर:- श्री कृष्ण की कटि में बँधी करधनी में छोटी-छोटी घण्टियाँ सुशोभित हैं ।

कटी = काटना:- मेरी पतंग कटी थी ।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

सौजन्य:-

सुनील वर्मा ,
हिंदी शिक्षक,
सरकारी हाई स्कूल,
जस्सो मजारा,
शहीद भगत सिंह नगर.
+91 9988531400